5504

F-72

नं० ५५०४-घ

सूर्यव्रतमाहा०

पत्राणि ७२ (संपूर्णम्)

नं० १०१३

(पौराणिका भाषायाम्)

नं. ८१

नं. १०१३-क

सूर्यव्रतमाहात्म्य

५२ पत्र

सू॰ ॐनमःसूर्याय॥अथसूर्जप्रणालि
१ खिते॥दोहा॥ॐवंदोचरणा॰
लिदैयरेभक्तिप्रेमलवली
न॥महिमाअगमअपारहै

सादिवज्ञानप्रवीन ।वंदोच
रणजोरिकर श्रीपतिगौरी
गणेस॥ नलसौदासकहह
तेसुजसभवरतोकथादिनेस ॥

सु॰
२

एकसमैगिरिजासहितशं
भरहैकैलास॥ उपजैअति
अनुरागहृदकौहूकथा
॥ परगास॥ आदिभवानीश

कारहीपरछैप्रेमहद्वार्॥स
रजप्रतापजोकथ्याहैसोमा
हीकह्योसमजा॥श्रीसर्जे
कीमहिमाणीकरवरनोली

सूः ह्रः ॥ कोटिनाविप्रभूलायके
३ केंचनदांताााा दीह्र ॥ प्रथ
3 मह्रिविसीरनाश्कैशंक
कीह्रप्राााास ॥ प्रवेदीह्रः

करजोरिकैवरननलीना

म॥चौपाई॥गोंसृजिरैदेवताभै

प्री

सुभिरातही॥सुभिरातप्रभात

बुद्धिदेमोही॥ज्योतिस्वरूप

स्तुः आदितवलवाना॥ नेजक्षता
४ पतमअगातेसमाना॥ नम
५ आदितपरमेश्वरस्वामी॥
अलखनिरंजनअनवजा

मी॥ वरति नम्नाई जोति के
लीला॥ धर्म पुंथ परम
हसीला॥ जोंति कला वड
श्री विराजै॥ जगमगाका॰

स्त्व॰
५
5

नतकुंडलछाजै॥ नीलव॰
वतनछाविनतंगाग्रसबा
री॥ ग्पानतैयानयमैव्र
नयारी॥ परमेष्ठनीतग्रा॰

दितअविनासी॥ अजैअना
दसकलघटवासी॥ जाह
कथामैकहोवषानी॥ सो
प्रुषहैअपिरमानी॥ म

सू: दिमाआदितआगमआपा
६ रा॥ तीनभवनजोतिउज
यारा॥ दोहा॥ आदितकथा
प्रतीतहैतहगावहीसम

6

सुजान॥ तीनलोकछुवउं·
दीनदैकरहीप्रतापवखा
न॥चौपाई॥ सुनतहुउमाश्रा·
दिनपरतापा॥ बरनौविम

श्रः लछमेकीजाया॥ नाथमहा
८ तमहतनऊभवानी॥ कहोक
7 थाप्रनीतमहभवानी॥ किरि
जाश्नकथामनलाई॥ मै

तोहीसुर्थकद्देसमसुफारि॥वे
जसुनैपकमासप्रानाः॥म
नवचकमसुनैपरिप्यना
मादसावतकोरतवारा॥

वृ॰ नैमयमैमेकरैग्रहाता॥क्र
८ सोंविछाईकैरैविहामा॥
8 हयांछिनलेईहजैकीनामा।
इनीटेकयैरेचयाजवहो।

हो हो दयाल दयानिधितु
महो॥ मिथ्यावचनकहेतु
हितोहो॥ मनवचकर्मजो
रुछोमाहो॥ तिहचैप्रसंन

मू: २

होही बलवाना॥ पांचषत्र
होत्रियिसमाना॥ ताहि
जीतसकैनकोई॥ विद्या
वानगुनवंतवडहोई॥

९

दोहा॥ वांफिकयामनलाइ
कैटेकयरेव्रतध्यान॥ तौद
वैपांचव९त्रहोंईजोधाश्रि
समान॥३॥ इतिश्रीहरिजीमहात्म्ये

मू: १०

महापुराणेवांफकथावरनो नाम
प्रथमोध्यायः॥१॥ चौपाई॥ ऊं
हर्जिकथा है अम्रनवानी॥
मतप्रापियकैसदभवानी

10

ऊषमरागहोईजाकेअंगा ॥
सोइहकथाकरोप्रसंगा ॥
रविदिनभोजनकैअलो
ना ॥ पोइरूपमहवस्त्रचडावै·

स्रः दैता॥ विप्रभलाङ्केहोम
११ कावै॥ वोह्रीभसमलैत्र
गालगावै॥ नीहचैञ्जछव
रनछैजाई॥ धनसमाहेना

हैसउजगुसाईं ॥दोहा॥ जा·
केश्रेयाऊपहेहोई॥ लीरहस
नैश्रेरात॥ नीहचैसहजेप्रता
पैतेपावैकायादान॥ इति

स्तु: श्रीसर्जमहात्म्येमहाप्रभा

१२ ऋषीकाण्डवरतोनामद्वि

तीयोध्यायः॥२॥चौपाई॥ ॐ

सर्जकण्यामैकदोत्रका

३॥मनवचकर्मसतनङ्गाचि-
तलाई॥जाकेंवरनश्रंगाम
हल्हीं॥श्राखिरकण्यापदे
नरसोंई॥जाकेहरगाङपरे

स्तु. अतिभारी॥ सोपकथाकरे
१३ अनंतभारी॥ पांचव्रतनराके
रेश्राःनवारा॥ मनवचक
र्मेकथाअनंतभारा॥ श्रावर

13

चंदनलेपनकरं। निसदि
नं ध्यानमहृतजपपरं॥ नी
हृचैवरतमकलामिटिजा
ं॥ धन्यसोमाहृमाहेसभूजेग

स्तु: साईं ॥ दोहा ॥ जाकेबरनसंग्रा
१४ महसोतिनहुतैश्रान ॥ प
14 न्यप्रतापश्रादिनकरमहि
माकरोबखान ॥ इतिश्री स्तुति

महात्म्येमहापुराणेश्रीमद्वैनोनाः

मनत्रीयोध्यायः॥१॥चौपाई॥

ॐमहजेकथामैकहौबजाई॥

मनत्रास्थिरकोमनङ्गचित

स्तुः लोः॥जोतरद्दोःश्रेयादेउ
१५ लोचन॥मोयग्रहकयासहै
15 उघमोचन॥निसदिनकै
घलोनग्रहारा॥विविधिमा

तिकैतैमत्रचाता॥पीपल
त्रछितलह्तैप्रताना॥पा
वैलीचतत्रंपवलवाना॥
त्रंयालीचवनातिह्चैपावै॥

स्ट जो इहि कथा हाँ चित लगावै
१६ दोहा॥ अथा लोचन पावै जो
जा तै प्रभु एक ॥ पुलकित
प्रेम पुनीत नैन पै कथा परु.
16

टेक॥ मनवचकर्मेश्रनुरागा
हृदभोजनकैश्रलोना॥
रविदिनदृगांधनह्चीनम
नपुहृपचलाविदोना॥ इतिश्री

स्कं: स्कंजेमहात्मेमहाभ्रराणेग्रंथालो
१७ चनपावतोनामचतुर्थोध्या
यः॥४॥ चौपाई॥ जात्राकरेत
खलेविदसा॥ सोःइहपेडे

१ रात्रहेसा ॥ नीहरवैताह

सकलसिद्धि होई ॥ लाभम

वतचालिसावे सोई ॥ जाक

रिति होई अति भारी ॥ सोर

स॰ इकथाकैग्रन्तसारी॥ नीह
१८ चैतिमिसकलमिटिजाई॥
18
धम्ममहिमाहैसुजेणुसाई॥
दोहा॥ याचाकरिनरचलेसो

ऽहमेतैगुणान । नीह्वैतमकः
लमनोरथपुरवैश्रीभगवा
न ॥ इतिश्रीहर्जंमदानप्पमहापुरा
णे यात्राकरनोनामपंचमोध्या

सू: दो:॥५॥चौपाई॥ मैं सत ऊउमा
२१ मै कहै ब्रजाई॥ सत व व क:
11 मै सत कहै चितलाई॥ श्रे सम
हिमा श्रारित देवा॥ जासक

रहोमलरातलामत्रैमेवा॥मेटगा
कसकलंततनजाम॥गुलकि
प्रेमहिपद्दरबडूलाम॥दी
नानाथ्यातेरंजनमाई॥माहिमा

सु· भवतेव्यतीतजाई॥ सुजेक
२ धामैकहेतुकाई॥ मनवच
20 कर्मसेतुमनलाई॥ दंडवत
देहेनरप्रतकीध्याना॥ श्रोता

तैलैसिंधुरब्रजसमाना॥ तेज
प्रतापवरातिनदिजाई॥ रुजे
कयापदेमनलाई॥ करहीं
संभपदकयाप्रतीना॥ रुजे

सु॰ प्रतापमैभयोउजीता ॥दोहा॥
२१ ऐसिमहिमाआदितकरव
21 रनोपरमउछाह॥ सुनहुउ
माप्लकितननकीरतिप्र

भयोगाह॥चौपाई॥कहोक
थाप्रतीतसुभवानी॥छूटी
महातमसहवतूभवानी॥का
र्तिकचैतपुनीतबहुभारी॥

स्व· साजहीआरतीसकलनर
११ नारी॥आराचंदनकरकी
बांती॥प्रजानाथकरहीव
इभांती॥जोमनकामना

उगमहराथे॥ पलकथ्यान·
परीखधतेभाथे॥ सोकावज
प्रखहीभगावाना॥ श्रेसेहै
प्रभुपमानानिधाना॥ दोहा

मू: लीलाश्रमसश्रपारुद्रैकपा
११ सिंधुभगवान॥ कल्हाकथा
प्रनीतश्रातिमनुश्राक्षिप:
परीध्यान॥ इतिश्रीमूर्जेम

ह्मात्म्येछटीमहात्मवरनोना

मषष्ठोध्यायः॥६॥चौपाई॥

गेंसुनहुउमाप्रभचरित्रत्र

पारा॥नायकथावरनोवि

सू. त्मा। सिंगलदीपएकतत्र
१४ कानाउ। तहांवसहीपरी॰
छिनराउ॥ महाप्रवीनधर्म
उपकारी॥ तासुभवनएक

कन्याकुमारी॥ स्तुतिनकौस्तु
जैकेस्तुजा। सेवैस्तुजेश्रवरत
ह्रीहृजा॥ प्रेमभक्तिकयामं
नलावै॥ तिस्तुदिनटैकस्तुजे

ह. पलावै । इसिकारनप्रभत
२५ गुसाईं । सेवहिंसुजेमनचित
25
लाई ॥ नामप्रभवनप्रभकर.
हीकलीवा ॥ नीनप्रभवनको

उपावतमेवा॥ एकसमैस्रव
रज्ञस्रसभएउ ५ कत्वाससवसि
तितीररहिगाः उ॥ मंजतकर
नलगीमेःवाला॥ एयदैविरा

स्तु· जितमोतीयनकोमाला॥ति
१६ हिम्वंतरीषिनारदश्रायो॥
70 कंन्यादेषिमतिवहृतलभा
यो॥ठाढभाःमातिसरनीरा·

लीई उछिन्नकंन्याकरवीरा ॥
कन्याजलमैकरतपकारा ॥
श्रंवरदेहग्रहपिविदस्मारा ॥
कहनारदमहवकन्यावाता ।

सू॰ हमसुकारेडपहछकरना
१२ ता॥ हससुमातिसुमरीरयाव
27 भयोवैरा॥ श्रीसेवचनकदे
नाहिनैराा॥ मोहोत्रसकंरपा

लाघपदीता॥ श्रेशेवचनतः
कहेसतीसा॥ श्रवविनती
ह्नसमसवाती॥ श्रंवरदेह
नसहिससरपाती॥ दोहा॥

सु॰ नंगननारीजलमेरहैस
२८ तिसोकैहैकरजोरी॥रूपा
काहुपलाकिननम्रंब
रदीजोमारी॥चौपाई॥जब

कंम्यावज्ञाविनत्तीलाईं ॥ ने
ह्रीछिनमतेनवगाईल:
जाईं ॥ श्रंवरदेमतिभवन:
सिधाईं ॥ नेह्रीश्रींवींसंकर

द्वि· तद्दाग्रार्ई। सोम्रातिह्वजस
१९ भ्रजगतकीड्डा। सोग्रादि
29 तसोकहवैलीड्डा॥ जह्य
मैकरतह्लीश्रस्त्वाताना॥ व

निश्चवलैगायोग्रख्याता ॥
नाहिसमैश्राहिशिवभोरा ॥
संगाउमाजसवंदवकोरा ॥
सकलसाहितप्रभनाथ३

स्तु. माथा॥ सङ्घासकलतवविभ

३. वननाथा॥ ऊसलकद्दातः

४० वशिवमतमस्सकार्थि॥ वैद्देत

वप्रभकद्दात्रयकार्थि॥ सङ्घा

प्रभह्रीतवह्रीशिवकराजो
री॥ नाथह्पकाविनतीमो
री॥ काश्रणतायकीयेमनि
भारी॥ सोमोसोप्रभकरहु

म्रं विचारी॥ नवप्रभकहासुत
११ ऊहेभोरा॥ कन्यापरीछित
31 सेसेवकमोरा॥ सोश्रवसुत
मतिकररपाना॥ रिष्टवि

लोकीसतिकरध्याना ॥ पद्क

रतसतिसापजोदे २३ ॥ तेही

तेङ्ग्रावरतसतिभ २३ ॥ इन

नासतिसिवमतसमकाये ॥

सु. दिष्टमलानेउमतिनग्रयण
३५ नै ॥ सुनतवचनप्रभुकोपित
३५ भईउ ॥ कन्यासाहितनवमुनि
पदगईउ ॥ दोहा ॥ मतिसोकहा

वचनतबकोयकोपेमनला
ई।असकैंतकत्वमनकोप
उसोमोहीकहदृढभुकाई॥
चौपाई॥ तबसातिकरजोरी

मृ: कवचनहनताये। ययोपद
३३ कमलहर्जेगुनताईं॥ कह्म
३१ मतिप्रभहनवचनह्मा
मी॥ मोमोहूकमभंस्राधिकवी।

पहस्रप्रापञ्छीमद्रूप्रभुमे
री॥ विनवेनाय इवैवाकरेजो
री॥ नवप्रभुकद्दाम्हनड्डम
भवानी॥ इद्दाकेलोकसक

स्तु: सकलगुरुरूपानी॥ तेत्रव
१४ मतिममलेद्रशापा॥ जव
34 कीपउतमभगाहूपापा॥ दि
शा॥ तोनोभवनमहशामीरवि
जो

तिकीतपरगात॥ सूयषितः
कथ्यागुतगाउजह्रास्त्र
नकीवास॥ इतिश्रीहुजीमहा
त्म्यमद्रास्त्रा॥ लोकण्याराजा

मृः २५

परीक्षितनायदकन्याष्टापदे
ह्रीवतोनामसमसोध्या
यः ७ चौपाई ॐपंपाष्टाय
कतग्रकेनाउ हलयावि

प्रजावैहैदाउ॥नगरवसै
मनऊकोविलासा॥परम
कृपानहाहोईप्रकासा॥प्रजा
सुजेकोकैदिनराती॥निसदिन

स्तु॰ दीकथैरवङ्कभानी॥ कोटी
१९ श्रग्रिचारोरिसीनदा॥ श्रीम
जेकेश्राहमनहा॥ नहान॰
डागश्रघंडीनमहावा॥ चारो

घाटस्रोवरतनवघावा ॥ तह्रा

थंभपकवड्राविसाला ॥ स्रो

जोजनस्रोरहेउपना ॥ वौद्दी

थंभस्रर्जकवाता ॥ स्रातः

स्तु. ह्रीं षं भमेलागुत्रकाम्ला ॥ प
१० हिविधिप्राटेतग्रावहिज्ञा
३७ ह्री ॥ हतडकयाभनीतम
नमाह्री ॥ मेनोह्रीग्रषंकहे

समकाइ ॥ आदितकथाप-
ठेमतलाई ॥ दोहा ॥ अस्तुती
यत ॥ आदितपरमेश्वरम-
हिमाअगमअपार ॥ नीतभवत

सु· तेमभागेभएसकलउजोया
१८ ।॥चौपाई॥ऋषिध्यानमन·
३८ लावैपावैकायादान॥श्रम
प्रभस्वामीअंतजामीकृपा

करद्रमगावात ॥ जोतरछुटी
श्रतमतलावैमतवचकर्मै·
श्रतमात ॥ हातरमतिमव
श्रत्तातिकरही ॥ प्रमतहोटी

स्तु· भगवान ॥ सभग्रनआगामी
३९ लहसागरहमरञजागरह
39
पतिपान ॥ मनवकर्मते
दराधिन मंजनकार ।

ह्रीवधात॥ इतिश्रीस्कजेमह्रात्मे
मह्रापुराणे पंपापुरराजाइल
पर्वविप्रकथावर्तोनामअष्ट
मोध्यायः॥८॥ चौपाई॥ ॐतितिरि

सू: जाग्रत्कथामनलाई ।। १२
प. वदिसाजह्नाउगाह्नीउसाई ।।
हरवादिसाएकश्रीप्रदेसा
नह्नाकेराजाहपमहैसा । क

ह्रीसदाभ्रादिनकरभुजा ॥
ताहेसमानकोभक्तनहूजा
एहिविधिसकलनयावउ
जयारा ॥ नह्रासयलपकव

सू. ह्रंविस्ताय॥ह्रजायकोस्तपर
५१ वतपरवाता॥नह्रावैस्त्रा
दितवलवाता॥ह्रोःपद्दा
41 ःनदाकरह्रीतिवासा॥किरै

पश्चिमादिमध्येमडलास्था॥म

नवचकर्मेकथाप्रतयाईं॥

त्रुजेचरित्रमेनमद्दीसनाईं

हतितिरिनाचकौनभपवा

सू: नी॥ तेजप्रतापमहातेमतस
पा: हकानी॥ धमप्रादितजो·
-५८ नकीपहलीला॥ यामपुरं
पामरूपीला॥ जोनरकथाम

जैकीगावै | चिढेविमानवैकुं
ठसीदावै | सर्जेकथादैस्र
सतवानी || स्रमातिहराष
नकरहीभवानी || श्रस्तुती ||

सू॰ त्नमप्रभस्वामीश्रेंतरत्नास्मी ॥
४३ सोजोतिकलाउदीतमही ॥
५९ त्नपतियाताश्रीभगावाता ॥
काजकपाहमश्रयमपरा ॥

श्रौविजोतिविराजेकुंडलछा

जै। तवप्रतापहैतीनभुवना

माहिमाप्रभुतेरीहैयनदीले

येनामपातकहरन॥इतिश्री

सू
४४

सूरजमहातमेमद्धाप्रतालो
दछिनदिसाराजाअग्रमदे
सवरतोनामनवमोध्या
यः॥४॥चौपाई॥ औरीराजाकरहली
उनोके

५५

ज्ञोरी॥ एकसंदेहश्चवरम:

नमोरी॥ उत्तरादिसाकहउ:

गाह्रीग्रसाई॥ सोमाह्रीनायक

ह्रोसमफाई॥ कहनलगोशि

हृः वकथारिमाला ॥ जोहिविये
४५ उतरङ्गाह्रीकृपाला ॥ उतर
दिमाकरकथाकह्रातो ॥ म
नत्राह्यिाकैसतङ्गभवा

नी।तह्रासैलपकव।डविला
रा।सोजोजतमोउचंपह्रारा॥
कंपैआनाकिरननहिपावे।
पहिविधि।नप्रश्रांपियार

स्तु: जनावे ॥ तहावासकलजग
५९ काहोई ॥ नवसोपापमलेछ
होईसोई ॥ पाहिविथिकवहो
उगाहोनभाना ॥ मैनोहोत्रं

कहैपरवाना॥ पकसमैत्र
चरजेग्रसमभेउ॥ नारहमति
नहावाचलिराप्उ॥ देषात
नग्रसकलग्रंथियारा॥ य

रुः मेकथाकरत्नामविस्तारा ॥
४७ किरीकिरितग्रस्तकलमाति
देषा ॥ पापमेवाहस्त्रवरानद्दी
लेषा ॥ मतमहनारदकरद्दी

विचारा॥ कन्हाम्रापेहमतग्र
श्रीयाया॥ अमकोहिनाद
कोपैजवह्री॥ नग्रमणापदी
ह्रमातितवह्री॥ कुष्ठस्रजत

कृ: कलनरनारी ॥ धर्मकथाक
४८ रनामविसारी ॥ ऊधवरत
भईसबकेअंगा ॥ श्रीठोबर
नभपेसकलनतमंगा॥के

इतादाकुहिसोवाचो॥ सव
केकुष्वातमेसाचो॥ वि
कलमपतदानवंस्हना
ती॥ आहिआहिसवकराहेप

स्तु
४२ कारी। स्वापीतकरीमविलस्रजे
पस्त्रापे॥ उतरादिसाकरास्त्र
६५ पंजनापे॥ स्ततनकयास्त्रा
दितमसकापे॥ कट्टागापेस्त

तिउनरव्रलाते॥ स्वापीनक
रीउनरकहस्राप॥ स्रवहम
रेपहवानजनाप॥ स्रव·
कऊस्वातिमैपछ्वोतोहो॥ उ

सू: ग्रहस्थापकवद्धोःहृवोह्री॥
पं: कइनलगोनास्ह्मनिजव
50 ह्री॥ श्रंगावानदेघाम्रनितव
ह्री॥ श्रंगावानदेघाम्रनिके

सा। मातङ्गहंसमसोवजैसा
चक्रितभयप्रनतिदेवीकैश्र
गा॥ त्रिकसेउवनतसकल:
ततभंगा॥ ततमहक्रुधमति

सु: कहभोउ॥ माकलदोईद्

पा। जैसीकहेउ॥ प्रवकड्पस

मेप्रछोतोही॥ केतेदितप्रंग

वतेरहेमोही॥ कृपाबिध

5।

प्रभुपरमिस्रगाथा॥भरतम
पेततकेहिअपराधा॥सोमो
हीनाथकहोसमस्काहि॥जे
हितैअंगावरनामिटिजाई॥

स्तु: नवप्रभुकह्रास्तनूममवा
प२ नं॥ उह्राकेलोकस्तकलग्र
52 हयानी॥ स्वकहह्रापदीह्र
नमभारी॥ व्याकलर्भमक

लनरनारी। सबकरअंग्रामे
गातमकीह्ला॥ उनराज्ञा३ला
पतमदीह्ला॥ दोहा॥ श्रबमैकहैान
महतकप्याप्रतीतअंनेरा

स्तुः उग्रहस्तापस्त्रा।पतकहव

५३ रतमीटैतवस्त्रंग ।। चौपई ।। वि

करवचनतारदमनमा

ना ।। उतरादिसाकहकी

53

हृपयाता॥ द्वादसतदिनमहृउ
नरापेउ॥ नप्रह्लापमतिउ
प्रकिपेउ॥दोहा॥ नारदउ
नरजाकेह्लापत्रनप्रह।

स्तु. कीदृ॥ नेजप्रतापश्चादित
५४ करहाभीजवन्तोली·
दृ॥ इति श्रीस्तुजं महात्मे
महाउदालेनाव स्वापस्त्रनस्तद

देह्वातोनामदसमोध्यायः॥ १०

चौपाई॥ ओंअस्तकहिस्वाति:

श्रादितपहत्राये॥ उनयदि

ताकरात्रर्थजनाये॥ स्वाय

स्तु. ग्रनग्रहकोह्रग्रमर्ग ॥ यंत
५५ प्रतापनवतिनजाई ॥ ग्रव
55 हातिग्रादितहरघीनभई ॥
उ ॥ दयालागीनवम्रतिसे

कहेउ॥ अवनातित्रेसेप्रम
भलाइ॥ स्वामीवीदलेरुव
रजाइ॥ वरुनकृपाभेमनि
परभारी॥ वातिनजाजो

स्तः निश्रयिकारी । विदाह्रोपम
५८ तिग्रहकहश्रापे ॥ हराषित
56 ह्रोर्ष्मिर्जत्रनगापे ॥ हराघ
नमेगालगावह्रीनारो ॥ यं

न्वस्त्रर्जेसवकरहृीथकारी।
यन्यश्रारेतक्यायाकेराज्ञा।
ज्ञाकेज्ञातिवह्रश्रेरविराज्ञा।
कोहीविपनहृानेवनजीवावा।
त्र

स्तु· । स्तुतिनारदसुजेकीगाथा ॥
८७ स्रहमेथीजगपकरतस्तुति
87 लागे ॥ तीनभुवनकीदलि
द्रभागे ॥ सबकहनारदति

वनपटापे ॥ गणवदीरेवन
हाग्रापे ॥ ग्रानाविलग्रापेत्री
प्रारी ॥ ग्रापेमकलमाहेन
वनारी ॥ वहूप्रकार ॥

मतिसबहीजीवाणे ॥ हराषि

नेहोईसजैगुनगाणे । हर:

षितमंगलगावहिनारी ॥

ब्रलणवेदपढेजैजैकारी ॥

ब्रह्मत्वं दत्तपानपकवाना॥

मज्ञाकरह्रीयाहिम्नतिया

ना॥ हर्षितह्रीपसूजग्रतमा

वा॥ तालंपभावजसंघव॰

ह्.
५९

जावा ॥दोहा॥ जगपकीतोम
तिनारदसोभावरातीनजा
ई ॥ तैतीसकोटीदेवताहर
षिकयागनगाई ॥चौपाई॥

69

जेतयथेकथ्यापयख्याना ॥
नायकहेर्इ छ्रकल्याना ॥ जो
इहकथ्यापठेमनलाई ॥
नापयश्रादितहेर्इमहाई ॥

हृ॰ पत्यप्रनापप्त्रादित्नवलावा
६६ ना॥ तेजप्रनापत्नमत्र्यग्रिम
माना॥ दोहा॥ गिरिजामछ
हीसंभमहत्नहजेचरित्रम

60

नलाई दछिनादिसाकदा
उराहीनाथकाहिसमुफाई
इतिश्रीसर्वकमहानमपमदोप
गणेनारदजापसोभावर

मृ: नीनमैकादशोध्यायः॥१८॥ अथोपरि
दा गैंकदेहेंभुम्हतमैलक्रमा
री॥ म्हजेंचारिचमैकदेविचा
61 री॥ कहनलगोशिवकथात्र

जाई। जेहिविधिदछिनउग
हीग्रमाई॥ दछिनदिसापेक
छ्रनगा॥ जेमलविप्रनहाके
भूपा॥ द्वाराधितभजनकोरि

सू॰ नराती॥ नहारहहीस्रादिन
६२ वद्रुभाती॥ पाहिहेविचिग्रभ
हीजोतिविराजे॥ अनाहद
नादवंटाधुनिवाजे॥ नैनी

62

सकोटीदेवतातस्था ॥ श्रीजग
न्नाथकेक्षेत्रमसनस्था ॥ दक्षि
नवसहिकाशीप्रियागा ॥
नस्थावसस्थीसवलोकस्भा

सू॰ गा॥ महेन्द्रावलभद्रतन्हासे
६३ गा॥ तन्हावमहीसरस्वतीरे

63 गा॥ कृपासिंधुप्रभुपरामत्र
गा॥ तिमहिंदनभजनकैश्रः

बाधा ॥दोहा॥ दक्षिनदिसा
पुनीतहैसबकहउमाचितला
ई ॥ आगीलग्रथजमहोईहै
सोनेकेहोवफाई ॥इतिश्रीस

मृ. जैमहातम्येमहाप्रगासिदृहिण
८४ दिमाराजामैमेलविप्रकथा
64 कथावरतोनामद्वादशोध्यायः॥१२
चौपाई मैंकालिजगयातिहे

ईनवजेहै ॥ मानघकेनवमा
नघघेहै ॥ नवप्रभलीहैश्र·
वनारकलंकी ॥ मानघनत
नवहोहैपंकी ॥ दछिनादि

मृ· सारविउगी है जाई ॥ श्रागी·
६५ लश्रर्थकहो समुजाई ॥ धर्म
65 कथाचालि है वहु भाती ॥
नैमधर्मकरी है दिनराती

विप्रजीवाश्चप्राप्तवजेरहै ॥
नीह्वैनामसह्र्जकेगरहै ॥
लक्ष्मीवरावरकरहीतिः
वासा ॥ धर्मकथ्यातहाहोर

सू० ॥ प्राणा। मिथ्यावचनको

९९ ॥ नहिभाषे॥ तिसदिनटेक

सुजेपराणै॥ धर्मविचारस

जैनहाकरैहै॥ द्वादशाकला

66

जोतिनहावरीहै ॥दोहा॥ छाद
सकलालैउरीहैआदेतनव
हीआपे ॥ प्रविलजतमके
पानककणापछेतछैआपे ॥

सु: चौपाई॥ आगीलस्वयंप्रभुटेकी
६७ हनावा॥ हातेगिरिजाके
मनप्रतिभावा॥ मगानभई
हातेशिवकीवानी॥ हरषि

67

स्वर्जंगतकाहीभवानी॥नी
तिभवतजोहिताबैमाया॥
सोप्रभुहोहिअनाथकेनाथा॥
जोपंकच्यापकेमनलाहि॥

१२८ बाढैधर्मपापछैजाई॥दोहा॥
जोइहकथामनलाइकैटेक
पैव्रतध्यान॥जोइछाकरि
पढैनरपावहीश्रीभगवा

न ॥ इति श्रीसूर्जेमहात्म्ये महापुरा
णे कलंकीअवतारवर्ननो ना
म त्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ इति
श्रीसूर्जपुराणसंपूर्णम ॥

मु· ॐत्रपत्रतमह्रातमालिखेने ॥
६९ ॐकार्तिकमासप्रथमजोर
69 ह्र ॥ तीनपत्रतलसीदलवा
ई ॥ ॥ आहनमासध्यानजो

यर्है॥ सकरवाटीकेभोजनत
कर्है॥२॥ पुषमासकेप्राणी:
रहै॥ तीनदुधकेभोजनका
है॥३॥ माघमासकेहवनद्रवि

ह्रः चा ॥ तिलपिंडकीकौग्रहा

७. ता ॥४ धा ॥ फागनमासजोपढवि

70 यिहैं ॥ इहीपिंडकेदीयाहो

हिहैं ॥ ५ ॥ चैत्रमासकेपढो ·

मवह्राया ॥ वृतगंडकभरीक
वैस्रह्राया ॥ ६ ॥ वैशाखमासः
जोप्राणीरहई ॥ भ्रामीलता·
हचाटीसोईरहई ॥ ७ ॥ जेठमा

स्तु: सकेसबविचारा॥ अंजलीनी
७१ नजलकौअहारा॥८॥ ब्राह्म
णमासजोयहिविधिरहई॥
नीनमीरचकेभोजनकरहीं॥ ९

71

तावनमासकीजोप्रानीरहई ॥
कपिलगऊव्रगाऊकभरीकेयेषद
रा॥१०॥भाद्रोमासहिविधिरहई ॥
मौरषंडकेढीगाहारहई ॥११॥

सू॰ कृत्वायमासकेपहोऋवहा
७२ ग॥ चंदनतांडकेकौश्रहा॥

72 इतिहनुमाहात्म्येसंपूर्णम्

सं॰ १९२